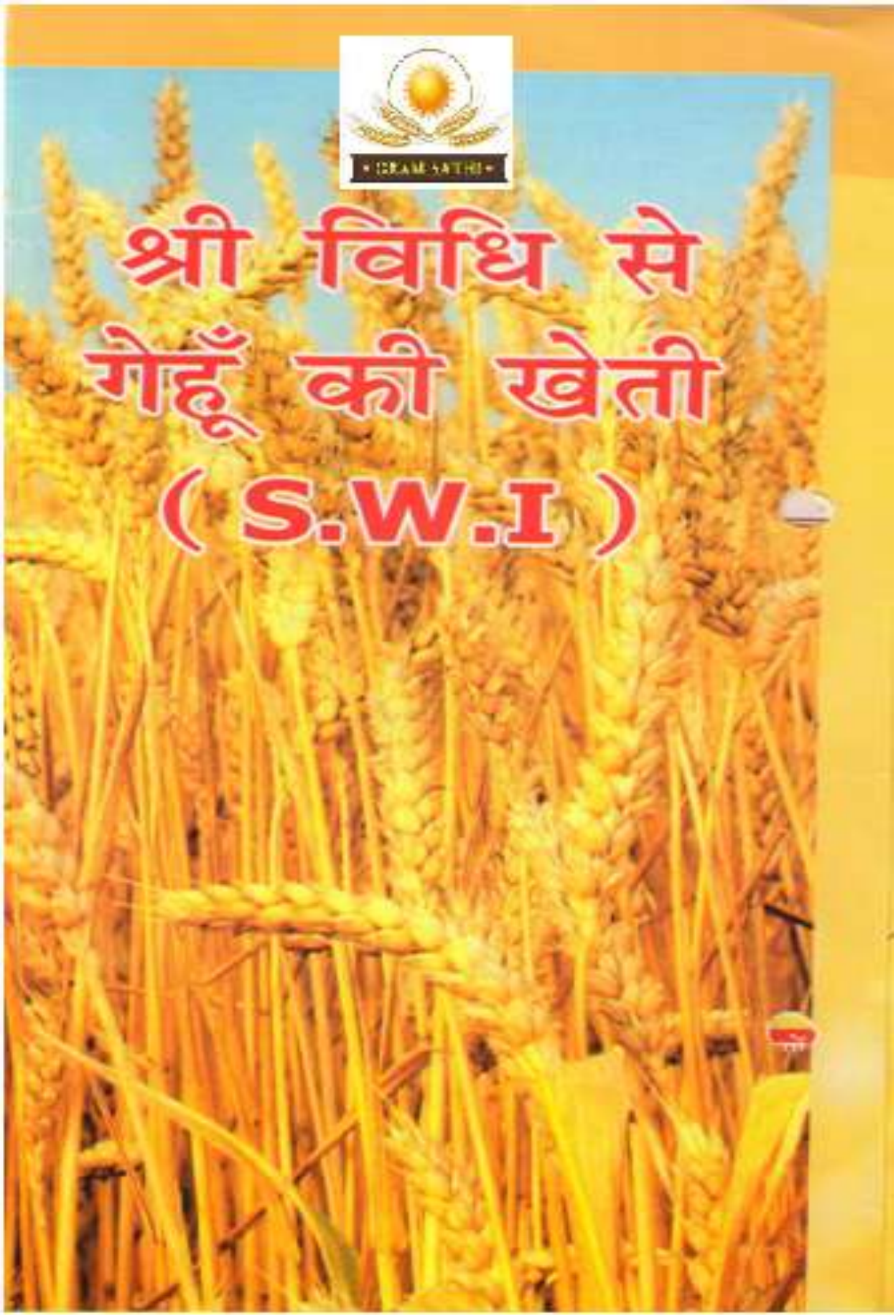
श्री विधि से
गेहूँ की खेती
(S.W.I)

श्री विधि से गेहूँ खेती क्या है ?

यह गेहूँ की खेती करने का एक उन्नत तरीका है जिसमें धान की खेती की श्री विधि के सिद्धांतों का पालन कर अधिक उपज प्राप्त किया जाता है जैसे:-

- कम बीज दर : सिर्फ 10 किलोग्राम प्रति एकड़
- बीज शोधन एवं बीज उपचार
- पौधे के बीच की दूरी (8 इंच कतार से कतार एवं 8 इंच पौधा से पौधा)
- 2 से 3 बार खरपतवार की निकासी एवं वीडर से कोड़ाई फसल की देखभाल सामान्य गेहूँ की फसल की ही तरह की जाती है।

इस तरह गेहूँ की फसल की अच्छी तरह देखभाल करके पड़ोसी राज्य बिहार के गया तथा नालंदा जिले के किसानों ने औसत 14 क्विंटल प्रति एकड़ एवं पूर्णिया जिले के किसानों ने औसत 19 क्विंटल प्रति एकड़ उपज पायी है जो उनकी पहले की उपज से लगभग दोगुनी है।

बीज का चुनाव एवं बीज का उपचार

बीज का चुनाव :- इस विधि के लिए किसी खास बीज की जरूरत नहीं है, आपके इलाके के लिए जो उन्नत बीज अनुशंसित है उसी का प्रयोग करें।

अगर अपना बीज पुराना है तो नया बीज खरीद लें।

बीज की मात्रा : 10 किलो प्रति एकड़

बीज का उपचार :-

10 किलो गेहूँ के बीज के उपचार के लिए निम्नलिखित सामान की जरूरत होगी :-

- 10 किलो उन्नत किस्म के गेहूँ का बीज
- गर्म (सुसुम या गुनगुना) पानी 20 लीटर
- केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट) 5 किलो
- गुड़ 4 किलो
- गौमूत्र 4 लीटर
- बेविस्टीन (कार्बेन्डाजिम) फफूंदीनाशक 20 ग्राम बीज उपचार करके बीज में आने वाले रोगों से फसल को बचाया जा सकता है।

बीज के उपचार की विधि

- 10 किलो बीज में से मिट्टी, कंकड़ एवं खराब बीजों को अलग कर छाँट लें।

- 20 लीटर पानी को बर्त्तन में गर्म करें (60 डिग्री से. यानी सुसुम होने तक)।
- छीटे हुए बीजों को गर्म पानी में डाल दें।
- पानी के ऊपर तैर रहे बीजों को बहार निकाल कर फेंक दें।
- इस पानी में 5 किलों केंचुआ खाद, 4 किलो गुड़ एवं 4 लीटर गौमूत्र मिलाकर 8–10 घंटे के लिए छोड़ दें।
- 8–10 घंटे के बाद इस मिश्रण को एक कपड़े से छान लें जिससे बीज एवं अन्य मिश्रण घोल से अलग हो जाए, घोल के पानी को फेंक दें।
- बीज एवं अन्य मिश्रण में वेभिस्टीन (कार्बन्डाजिम) फफूंदीनाशक 20 ग्राम मिलाकर 12 घंटे के लिए गीले बोरे में बांधकर छोड़ दें ताकि बीज का मुँह फट जाए। इसके बाद अंकुरित होने के पूर्व बीज को बोने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

(इस तरह बीज उपचार बीज की बढ़ने की शक्ति को बढ़ाता है और वे तेजी से बढ़ते हैं)

खेत की तैयारी

खेत की तैयारी सामान्य गेहूँ की खेती की तरह ही करते हैं।

- गोबर खाद 10 क्विंटल या केंचुआ खाद 4 क्विंटल प्रति एकड़ के हिसाब प्रयोग करना चाहिए। कम्पोस्ट खाद की उचित मात्रा के बिना सिर्फ रासायनिक खाद का प्रयोग करते रहने से खेत की उपज क्षमता घटती जाती है।
- अगर खेत में पर्याप्त नमी नहीं है तो बुआई के पहले एक बार पलेवा (जुताई से पहले सिंचाई) करना चाहिए।
- अंतिम जुताई के पहले 27 किलो डी.ए.पी. और 13.5 किलो पोटाश खाद प्रति एकड़ खेत में छींटकर अच्छी तरह हल से मिट्टी में मिला दें।

श्री विधि से गेहूँ की बुआई

बुआई के समय खेत में अंकुरण के लिए पर्याप्त नमी होना चाहिए। बीजों को कतार में 8 ईंच की दूरी में बोया जाता है।

इसके लिए पतले कुदाली से 8 ईंच (20 से०मी०) की दूरी पर 4 से 6 सेमी० गड्ढे में 2–2 बीज डालकर कतार से बुआई करते है और उसके बाद मिट्टी से ढक देते हैं।

एक सप्ताह के भीतर जिस जगह बीज नहीं अंकुरते हैं वहाँ नया बीज लगा देते हैं।

खेतों की देखभाल

- बुआई के 15 दिनों के बाद एक सिंचाई देना जरूरी है क्योंकि इसके

बाद से पौधों में नई जड़ें आनी शुरू होती है। अगर जमीन में नमी नहीं हो तो पौधा नई जड़ें नहीं बनाएगा और बढ़वार रूक जाएगी।

- सिंचाई के बाद 40 किलो यूरिया एवं 4 क्विंटल वर्मीकम्पोस्ट को मिलाकर छींट दें।
- सिंचाई के 2–3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें, साथ ही खरपतवार भी निकाल दें।

इस तरह की कोड़ाई करने से गेहूँ के पौधे की जड़ों को लंबा होने में मदद मिलती है और वे मिट्टी से ज्यादा पोषण एवं नमी प्राप्त करते हैं।

खेतों की देखभाल बुआई के 25 दिनों के बाद

बुआई के 25 दिनों के बाद दूसरी सिंचाई देना चाहिए क्योंकि इसके बाद से पौधा में नए कल्ले तेजी से आने शुरू होते हैं और नए कल्ले बनाने के लिए पौधों को अधिक नमी एवं पोषण की जरूरत होती है। सिंचाई के 2–3 दिन बाद पतले कुदाल या बीडर से मिट्टी को ढीला करें साथ ही खरपतवार भी निकाल दें। यह करना अतिआवश्यक है नहीं तो सिंचाई के बाद खेत में खरपतवार बढ़ जायेंगे।

खेतों की देखभाल बुआई के 40 दिनों के बाद

बुआई के 35 से 40 दिनों के बाद तीसरी सिंचाई देना चाहिए। इसके बाद से पौधे तेजी से बड़े होते हैं, साथ ही नए कल्ले भी आते रहते हैं। इसके लिए पौधे को अधिक नमी एवं पोषण की जरूरत होगी।

इसलिए सिंचाई के तुरंत बाद 15 किलों यूरिया एवं 13 किलो पोटाश खाद प्रति एकड़ जमीन के हिसाब से छिड़काव करें।

सिंचाई के 2–3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें एवं खरपतवार को निकाल दें। इससे मिट्टी ढीली होगी, जड़ों को हवा मिलेगी और पौधे तेजी से बढ़ेगें।

खेती की देखभाल बुआई के 60वें दिनों के बाद

गेहूँ की फसल में अगली सिंचाई 60वें, 80वें एवं 100वें दिनों पर की जाती है। इस समय मिट्टी के प्रकार एवं मौसम पर निर्भर करता है। ध्यान देने की बात यह है कि फूल आने के समय एवं दाना में दूध भरने के समय पानी की कमी नहीं होनी चाहिए नहीं तो उपज में काफी कमी होती है।

श्री विधि से गेहूँ की उपज

वर्ष 2009 तथा 2010 में पड़ोसी राज्य बिहार के गया, नालंदा, पूर्णिया एवं मुजफ्फरपुर जिला के हजारों किसानों ने श्री विधि से गेहूँ की खेती की।

श्री विधि द्वारा गेहूँ की खेती करने पर अधिक उपज क्यों होती है ?

इसे समझने के लिए हमें पहले गेहूँ के पौधे की जड़ों को जानना होगा –

- अंकुरण के बाद गेहूँ के पौधे में सेमिनल जड़े निकलती हैं जो पानी एवं भोजन की तलाश में मिट्टी में नीचें की ओर तेजी से बढ़ती हैं, अगर मिट्टी सख्त है तो वे ज्यादा नीचे तक नहीं जा पाती है।
- 20 दिन के बाद मिट्टी की सतह के ठीक नीचे क्राउन जड़े निकलती हैं जो पानी एवं भोजन की तलाश में चारों तरफ फैलती हैं। अगर मिट्टी सख्त है तो वे ज्यादा फैल नहीं सकती हैं और नन्हें पौधों को पर्याप्त भोजन एवं पानी नहीं मिलता है।

जड़ों पर सख्त मिट्टी के प्रभाव को बोंसाई प्रभाव (Bonsai Effect) कहते हैं। कभी–कभी मिट्टी के नीचे पिथिडम फफूंद (Pithium) के आक्रमण से भी जड़े खराब हो जाती है।

श्री विधि द्वारा गेहूं की खेती करने पर अधिक लाभप्रद क्यों है?

श्री विधि में मिट्टी को बार–बार ढीला करने से जड़े ज्यादा बढ़ती हैं और पौधे को शुरू से ही पर्याप्त पोषण एवं नमी प्राप्त होती है साथ ही खरपतवार भी कम हो जाते हैं।

बीज उपचार के कारण जड़ में लगने वाले रोग की रोकथाम हो जाती है।

गौमूत्र नवजात पौधे के लिए प्राकृतिक खाद का काम करता है।

8 ईंच की दूरी पर बोने से प्रत्येक पौधे के लिए पर्याप्त जगह मिलती है जिससे उनमें आपस में पोषण, नमी एवं प्रकाश के लिए प्रतियोगिता नहीं होती है।

श्री विधि से गेहूँ की खेती करने पर कितना खर्च आता है ?

विवरण	मात्रा		दर	वर्ष	
	परपरागत विधि	श्री विधि		परपरागत विधि	श्री विधि
बीज	50 किलो	10	रू 25/किलो	1250	250
बीज उपचार					200
डी.ए.पी.	27 किलो	27	रू 15/किलो	405	405
पोटाश	27 किलो	27	रू 12/किलो	324	324
यूरिया	55 किलो	55	रू 7/किलो	395	395
वर्मीकम्पोस्ट		400	रू 5/किलो	0	2000
सिंचाई	5 सिंचाई	5 सिंचाई	रू250/सिंचाई	1250	1250
कोड़ाई	10 मजदूर दिवस	20 मजदूर दिवस	रू113/मजदूर दिवस	1330	2260
कुल नगद खर्च				4780	5545
कुल उपज (क्विंटल				8	14
कुल आमदनी खर्च काटकर (रू.)				4976	9776

इस तरह हम देखते हैं कि पारंपरिक विधि से गेहूँ उपजाने का खर्च 396 रूपये प्रति क्विंटल है जबकि श्री विधि का खर्च 325 रूपये प्रति क्विंटल है। श्री विधि से खेती करने पर लगभग 480 रूपये प्रति एकड़ की अतिरिक्त आमदनी होती है।

श्री विधि पालन करने के लिए आवश्यक बातें

- 10 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज दर।
- गर्म पानी, गुड़, गौमूत्र, वर्मीकम्पोस्ट एवं वेभिस्टीन से बीजोपचार।
- कतार से कतार 8 ईंच एवं बीज से बीज की दूरी 8 ईंच।
- एक जगह पर 2 बीज ही डालें।
- कम से कम रोपाई के बाद 2 बार 20 एवं 30 दिन पर कोड़ाई एवं खरपतवार का नियंत्रण।
- फूल आने एवं दाना में दूध भरने के समय सिंचाई देने की व्यवस्था।

श्री विधि विशेष कर छोटे एवं गरीब किसानों के लिए ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि वे बहुत कम जमीन में खेती करते हैं और उन्हें ज्यादा अनाज की जरूरत होती है। श्री विधि अपनाकर वे अपने परिवार की जरूरत पूरी करने के साथ-साथ कुछ बेचकर आमदनी भी कर सकते हैं। अपने खेतों में वे खुद श्रम करके खर्च भी बचा सकते हैं।-